Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11571210

Roll No. 24029000803
Total Mark 46/75.00

Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A010902T - Kathetar Gadya Sahitya

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5						
1B	3/5						
1C	2/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	3/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	10/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	10/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam 12-11-2025 Shift III rd Room No. 05

Paper Code A010902T Subject Kathetar gadya sahitya Year/Sem 3-sem

Name of Candidate Ragini

Roll No. 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

COE Facsimile

Signature of Invigilator

Signature of Candidate

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks

Total Marks in Words

A 0 1 0 9 0 2 T

Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course Master of Arts (Hindi)

Session 2025-29 Year/Semester 3- Sem

Subject Kathetar gadya sahitya

Paper Code

A 0 1 0 9 0 2 T

Exam Date

1 2 1 1 2 0 2 5

Name of Candidate

RAGINI

Father's Name

VINDHYACHAL SHARMA

महाविद्यालय का कोड College Code: K N 0 0 9

परीक्षा केंद्र का कोड Exam Centre Code: K N 0 0 9

परीक्षा का प्रकार Type of Exam

संस्थागत Regular ● — भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○

व्यक्तिगत Private ○ — बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

11571210

A 0 1 0 9 0 2 T

Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 9 0 2 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरे जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नही की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड-अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी-लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

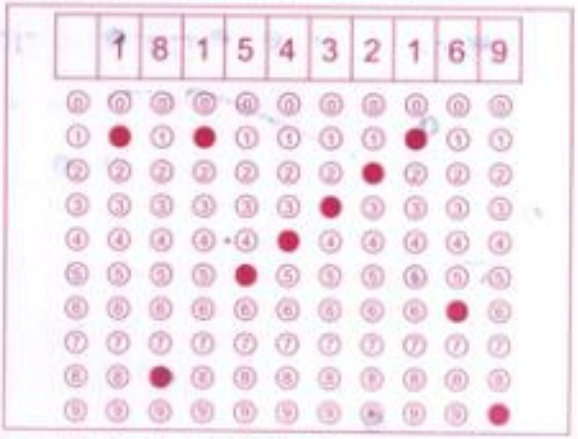

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

A 0 1 0 9 0 2 T

01

उत्तर सं० - 1 [a]

रेखाचित्र और संस्मरण हिन्दी साहित्य की अति महत्वपूर्ण विधाएं हैं। रेखाचित्र और संस्मरण में अति सूक्ष्म अन्तर होता है।
रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का चित्रण और वर्णन किया है इसमें बाहरी परिवेश और [illegible] पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया [illegible] है।
बल्कि संस्मरण में लेखक अपने जीवन के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति, वस्तु या घटना का भावात्मक शैली में वर्णन करता है।
संस्मरण में आतंरिक शैली पर बल दिया जाता है तथा अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किया जाता है।

विशेषता	रेखाचित्र	संस्मरण
शैली या विषयवस्तु	किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का चित्रात्मक वर्णन	अपने जीवन/किसी खास व्यक्ति, वस्तु या घटना का आनुभविक वर्णन
तथ्य	यह तथ्यात्मक शैली में [illegible] जाता है।	इसमें भावना की प्रधानता होती है।
तटस्थता	इसकी रचना लेखक तटस्थ रहकर करता है।	इसमें पारिवारिक अनुभव व व्यक्तिगत भावों का समावेश

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code: A010902T

02

		होता है
व्यक्तिपरकता	यह व्यक्तिपरक सा होती है	इसमें आपसी सदमाओ पर और अनुमवों का वर्णन होता है
उद्देश्य	किसी व्यक्ति या वस्था का प्रजगार करता	किसी खास व्यक्ति या घटना के बारे में अपना अनुभव साझा करना।

उत्तर सं० - 1[b]

आत्मकथा हिन्दी गद्य साहित्य की विकासोपन विधा है आत्मकथा का लेखन प्राचीन काल से ही चलता चला आ रहा है पूर्व में राजा महाराजा अपनी आत्मकथाएं लिखते थे। जिन्हें अर्थ लेखन अनेक भाषाओं में संचालित करते थे।

आत्मकथा का शाब्दिक अर्थ है स्वयं की स्वयं के द्वारा लिखी कथा।

आत्मकथा में लेखक अपने स्वयं के जीवन के बारे में घटित घटनाओं

Do Not Write anything in this Portion

और व्यक्तिगत अनुभवों को दूसरे के साथ साझा करता है। आत्मकथा स्वयं की जीवन की चरित्र घटनाओं और अनुभवों का सम्पूर्ण ब्यौरा होता है।
आत्मकथा लेखन अत्यंत प्रचलित शैली के रूप में उभर के आया है।
आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के अनुद्घाटित पहलुओं और इसके छोटे छोटे अनुभवों को साझा करता है। जिससे आत्मकथा में अधिक सरसता तथा आत्मीयता आती है।

– कुछ महत्वपूर्ण आत्मकथा लेखक एवं उनकी आत्मकथा

(i) बाबू गुलाबराय – इन्होंने अपनी आत्मकथा 'मेरी असफलताओं' में अपने जीवन की असफलताओं का वर्णन किया है।

(ii) राहुल सांकृत्यायन – 'मेरी जीवन यात्रा'

(iii) पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र – 'अपनी खबर'

(iv) हरिवंश राय बच्चन – इनकी आत्मकथा चार खण्डों में प्रकाशित हुई है।
(i) नीड़ का निर्माण फिर फिर
(ii) क्या भूलूँ क्या याद करूँ
(iii) बसेरे से दूर
(iv) दशद्वार से सोपान तक

(v) यशपाल → मेरा जीवन प्रवाह

Paper Code A 0 1 0 9 0 2 9

04

उत्तर संख्या 1 (c)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ निबंधकार एवं आलोचक माने जाते है। इन्होने अपने जीवनकाल मे अनेक निबंध लिखे है। इनमे से प्रमुख है —
अशोक के फूल, शिरिष के फूल, कुटज: इत्यादि।

कुटज आचार्य जी का एक मौलिक तथा ललित निबंध है। जिस प्रकार कथा साहित्य मे प्रेमचन्द का तथा नाटक मे हरिश्चन्द्र का नाम विख्यात है। उसी प्रकार प्रसाद जी का नाम ललित निबंधो के लिए विख्यात है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के कुटज निबंध मे हिमालय की पहाड़ियो मे चट्टानो के पास उगने वाले पौधे कुटज का वर्णन किया है।
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार कुटज निबंध एक उच्चतम श्रेणी का ललित निबंध है।

कुटज निबंध की विशेषताए निम्नलिखित है

(i) कुटज जीवन के संघर्ष की व्याख्या करता है।

Paper Code A01690 2T

(2) कुटज एक ऐसा पौधा है जो हिमालय की पर्वतो के मध्य उगता है तथा पत्थरो को चीरकर अपना भोजन ग्रहण करता है यह कुटज हमें जीवन मे आने वाले कठिनाइयो को तोड़ते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

(3) कुटज का पौधा विषम से विषम परिस्थितियो मे भी अडिग रहता है तथा अधीर न होने का संदेश देता है।

(4) कुटज जीवन के दुखो के बीच भी अपनी जगह बना लेता है तथा बिना किसी सहारे के भी अडिग रहता है।

उत्तर सं० - 1 (ब)

कविता क्या है निबंध के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी है जो हिन्दी साहित्य मे अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते है। इन्होने आलोचना के तथा निबंध के क्षेत्र मे क्रांति ला दी है।

इन्होने 'कविता क्या है?' निबंधों में कविता के मानव जीवन मे उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए उसकी महत्ता को दर्शाया है।

आचार्य शुक्ल जी के अनुसार कविता सृष्टि

Paper Code 1 0 9 0 2 7

पाठन की वस्तु नहीं है वरन उनको मौलिक गुणों में ये भी आता है कि कविता नीरस तथा पहाड़ के समान हृदय रखने वाले को भी जीवन की एक आवश्यकता है।

कविता मनुष्य को मनुष्य बनाने में मदद करती है। कविता का उपयोग स्वास्थ्य क्षेत्र में भी किया जाता है।
आचार्य शुक्ल के अनुसार जिसने नाजुकों के कलह में आनन्द का देखा जिसने खेत में लहलहाते पौधों को देखकर सुख का अनुभव नहीं किया जिसने जीवन के संघर्ष में भी आनन्द का अनुभव ना किया वह मनुष्य नहीं है।

कविता मनुष्य को मानवता धर्म सिखाती है तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का कार्य भी कविता करती है।
किसी कुटिल अधिकारी के स्वार्थ से अचेतन मन को। मलम पड़ाहों के सालों से चिरागे किसी घने मन के अंदर की आपार भ्रष्टता को मरने का कार्य कविता द्वारा ही सम्भव है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर से – 1 (e)

गद्य की वह विधा जिसमें शुद्ध संस्कृत निष्ठ परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग हो तथा जिसकी शैली में वर्णनात्मकता परिवेचनात्मकता एवं विवेचनात्मकता विद्यमान हो जिससे शब्दों का क्रम एवं रचना उचित ढंग से ली जाए तथा कम से कम शब्दों में अपनी बात को प्रभावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जाए हिन्दी साहित्य की ऐसी विधा को निबंध कहते हैं।

निबंध लयात्मकता एवं चित्रात्मकता तथा व्यवस्था का आभास होता है निबंध विधाओं की कसौटी है।
हिन्दी साहित्य में विद्यमान विधाओं में निबंध विधा सर्वाधिक प्रमाणिक तथा विचार वैभव से परिपूर्ण विधा है।

निबंध विधा पर विद्वानों के मत—

निबंध गद्य की कसौटी है तथा इसमें उपस्थिति का परिमार्जन एक सबके द्वारा सम्भव नहीं है
— डॉ॰ नगेन्द्र

हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं में गद्य की कसौटी पर खरा उतरने वाला एकमात्र विधा निबंध है। जिसमें रचना करने का उद्यम सभी लेखकों में नहीं है इसकी भाषा अत्यन्त परिमार्जित होती है।
— आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 9 0 2 T

08

उत्तर सं० - 1 (f)

विष्णु प्रभाकर हिन्दी साहित्य के जीवनी लेखक, साहित्यकार, देशभक्त नेता तथा एक उच्च विचारों के व्यक्ति थे। हिन्दी साहित्य में इन्होंने अनेक विधाओं में रचनाएं कि है जिनमें उल्लेखनीय है नाटक, निबंध, यात्रावृत्तान्त, जीवनी इत्यादि।

विष्णुप्रभाकर का जन्म सन 1912 में उत्तर प्रदेश के मुज्जफरनगर में हुआ था।

विष्णुप्रभाकर के साहित्यिक योगदान

नाटक — स्वर्णिम, पुनर्नवा, टूटते परिवेश

कहानी — एकबल, चन्द्रलेख, किरण

जीवनी — आवारा मसीहा (शरतचन्द्र चटोपाध्याय की जीवनी जो बहुत लोकप्रिय हुई थी।

विष्णुप्रभाकर का साहित्यिक योगदान —

विष्णुप्रभाकर का जन्म 1912 में तथा मृत्यु सन ~~19~~ 2009 में उत्तरप्रदेश में हुई

Paper Code A 0 1 0 9 0 2 7 09

(2) इन्होंने हिन्दी साहित्य में अनेक विधाओं में रचनाएं लिखी जिनमें इनकी जीवनी विधा के कारण इन्हें अलग नाम मिला।

(3) विष्णु प्रभाकर जी ने इलाहाबाद कई सर्वेटिक क्लिनिक के पद पर आसीन रहे तत्पश्चात अनेक साहित्यिक रचनाएं लिखी।

(4) ये गांधीवादी लेखक थे, स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी रहे तथा राष्ट्र को समर्पित अनेक रचनाएं लिखी।

उत्तर सं. - 1 (g)

हिन्दी साहित्य में गद्य की अनेक विधाओं में निबंध विधा का नाम सबसे कठिन विधाओं में लिया जाता है। निबंध विधा की रचना में अनेक लेखकों ने भाग लेकर भी नहीं समझा क्योंकि निबंध विधा में भाषा तथा शैली का अत्यंत ध्यान रखना होता है। इसमें भाषा में अधिकता, कठिनता बरती नहीं की जा सकती अतः निबंधकार होने के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति को एक अत्यंत निष्पक्ष आलोचक होना चाहिए जिससे उस विषय की आलोचना पर

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A O 1 6 9 0 2 T

10

पूर्व ही लेखों के मापदण्डों से कहे तो आचार्य शुक्ल का नाम हिन्दी साहित्य जगत के क्षेत्र में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है।
आचार्य शुक्ल ने अपने लिखित कलम से गद्य विधा के जगत में अपना अलग स्थान बनाया है।
आचार्य शुक्ल के निबंधों में कहीं कहीं पाश्चात्यवाद के दर्शन होते है तो कहीं कहीं मा... का बहिष्कार के दर्शन होते है। आचार्य शुक्ल ने अपने निबंधों में रसात्मकता को अधिक महत्त्व दिया है।
हम जानते है कि आचार्य शुक्ल रसवादी आलोचक है तथा वे एक श्रेष्ठ निबंधकार भी है।

आचार्य शुक्ल ने निबंधों में काव्यगत लक्षणों का विशेष ध्यान रखा है तथा अपने निबंधों में वे सरल शब्दों को शुद्ध चयन बड़े सतर्कता के साथ किया है।
आचार्य शुक्ल ने अपने निबंधों की शैली में विवेचनात्मकता तथा विश्लेषणात्मकता को अधिक महत्त्व दिया है।
काव्यगत तथा विषय की कसौटी की दृष्टि से शुक्ल जी श्रेष्ठ निबंधकार है अतः कुछ निबंध इस प्रकार है -

~~चिंतामणि~~ 1. चिन्तामणि (निबंध संग्रह)

Paper Code A0 1 0J 0 25

उत्तर सं० - 1 [h]

अपने जीवन में व्यक्ति अन्य अन्य जगहों के स्थान एवं वहाँ की जीवन शैली का अनुभव करने के लिए अनेक स्थानों की यात्रा करता है।
अपने यात्रा के दौरान किये गए अनुभवों तथा मिले गए व्यक्ति विशेष का वर्णन तथा भिन्न भिन्न जगहों की जीवन जीने का तरीका जो कुछ लेखक अपनी यात्रा में देखता हुआ है अपने अनुभवों को साझा करता है उसे ही यात्रावृतांत कहा जाता है।
यात्रावृतांत आधुनिक भारतेंदु युग में प्रारंभ हुआ। भारतेंदु जी की मेरी कश्मीर यात्रा से।
द्विवेदी युग तक आते आते यात्रावृतांत ने एक विधा का रूप धारण कर लिया था जो आज के युग में अति प्रचलित है।

यात्रावृतांत में लेखक अपने अनुभवों को पाठकों से साझा करता है तथा अपनी दृष्टि असलि तथा स्थानीय दशा का चित्रात्मक वर्णन करता है।

यात्रावृतांत तथ्यात्मक होने के साथ साथ मनोरंजक होना भी अनिवार्य है जिसमें लेखक अपने यात्रा वृतांत का वर्णन

Do Not Write anything in this Portion

चित्रात्मक ढंग में प्रस्तुत करता है।

कुछ महत्वपूर्ण यात्रावृत्तांत —

राहुल सांकृत्यायन — मेरी लद्दाख यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, हिमालय से दक्षिण तक आदि राहुल सांकृत्यायन सबसे प्रसिद्ध यात्रावृत्तांत लेखक है।

अज्ञेय — एक बूंद सहसा उछली

भारतेंदु — मेरी काशी यात्रा, मेघदूत...

यात्रावृत्तांत क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय तथा नागार्जुन को 'बृहत्त्रयी' कहा जाता है।

उत्तर सं० — [1]

'जिन्होंने जीना जाना' जगदीश चन्द्र माथुर कृत एक 'रेखाचित्र संस्मरण' विधा की रचना है।

चूँकि इसमें अनेक व्यक्तियों के जीवन संघर्ष के रूप में चित्रण किया गया है तथा उनके जीवन के अनेक

Paper Code A 0 1 0 9 0 2 5

पहलुओ के अध्ययन के बारे में चित्रात्मक ढंग से रेखांकन किया गया है और यह रेखाचित्र विधा की रचना कहलानी चाहिए किंतु इसमें वर्णित लेखक में कई लेखक स्वयं संस्मरण लेखन करते थे। लेखक के प्रतिभागी या उनके मित्र थे जिनका विशेष वर्णन लेखक ने अपनी कृति में किया है अतः इस विधा का नाम संस्मरण - रेखाचित्र अधिक उपयुक्त लगता है।

जिन्होंने जीना जाना संस्मरण रेखाचित्र में लेखक ने अपने जीवन काल में मिलित अपने सहयात्रियों तथा अनेक महान लेखकों के जीवन के कुछ अछूते अंगो को प्रसारित किया है जिसमें लेखक ने कई महत्वपूर्ण हस्तियों के संबंधों तथा उनके स्वयं के अनुभवों द्वारा जीवन के विषय में वर्णित अनुभवों को पाठकों के साथ साझा किया है।

Do Not Write anything in this Portion

[खण्ड – ब]

उत्तर सं. – 4

दलित शब्द स्वतंत्रता पूर्व सुनने में नही आता था क्योंकि स्वतंत्रता से पूर्व दलितों को लोग आम भाषा में चूहड़ों का कहा करते थे।

स्वतंत्रता के पश्चात महात्मा गांधी ने दलितों के उद्धार की बात कही जिससे दलित समाज में खुशी का संचार हुआ किन्तु आम जन के मन में दलितों के लिए अभी भी वही स्थान बना हुआ था।

दलितों का समाज में अत्यन्त गिरा हुआ स्थान था न तो इन्हे शिक्षा का अधिकार था न ही सभ्य समाज में रहने का।

दलित वर्ग की विषम परिस्थितियों का वर्णन वाल्मीकि जी ने अपनी आत्मकथा जूठन में विस्तार पूर्वक किया है जो दलितों के दयनीय जीवन पर करीब से प्रकाश डालता है।

सामाजिक स्थिति का सामना — दलितो को सामान्य मे रहन का कोई स्थान प्राप्त नही थी। समाज के अन्य वर्गो के अनुसार दलित जन चुने योग्य वस्तु नही है। के बादू कुत्ता, बिल्ली का छुआ बर्दाश्त कर ले परंतु दलित का धाम्मा पाप समझा जाता था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात दलित समाज मे भाषा।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले दलित समाज को पढ़न पाठन का भी अधिकार नही थी। स्वयं लेखक अपने मोहल्ले के एक क्रिश्चन व्यक्ति से पाठन करते थे तत्पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बाबा साहेब अम्बेडकर के बदौलत अहे स्कूल मे शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त हुआ तथा आम जन की भांति उन्हे विद्यालय मे प्रवेश मिला।

विद्यालयो का माहौल से कठिनाइयाँ जीवन—

विद्यालयो में अन्य वर्गो के बच्चे चटाइयो पर बैठते थे किंतु दलित वर्ग के बच्चे जमीन पर बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे कभी कभी मास्टर ही उन्हे गोद के पास [illegible] देता था जहां से बोर्ड पर लिखे अक्षर भी साफ नही होते थे। जिस कारण दलित समाज मे निराशा और लहर सा गई तथा दलित वर्ग मे इस अन्याय के प्रति

Do Not Write anything in this Portion

जाति का आरम्भ शुरू हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा की उपलब्धता

अपनी आत्मकथा जूठन में वाल्मीकि जी बताते हैं कि दलित होने के कारण बचपन से उन्हें शिक्षा ग्रहण का अधिकार नहीं था। उनका घर भी गाँव में कुछ जमाव था जहाँ गाँव की स्त्रियाँ पेशाब करने आती थी बल्कि रात में ही नहीं वरन दिन में भी। माहौल इतना खराब था कि शिक्षा की प्राप्ति किसी सपने से कम नहीं था। इन विषम परिस्थितियों में भी वाल्मीकि जी ने अत्यन्त कष्ट का वहन करते हुए शिक्षा ग्रहण की तथा डी.ए.वी. कॉलेज देहरादून में उच्च शिक्षा के लिए गए

राजनीतिक – आर्थिक विषम परिस्थितियाँ –

वाल्मीकि जी के अनुसार दलितों का जीवन इतना कठिन था कि उनसे बेहतर तो जानवर जीवन जीते थे। उन्हें उच्च समाज के लोगों से बोलने का अधिकार नहीं था ना उच्च जाति के लोगों के साथ उठने बैठने का अधिकार था। यदि

दलित हैण्डपम्प तक छू नहीं सकते थे यानी पीने के लिए उन्हें 3 किमी अन्य वर्गों के बच्चे का इंतजार करना पड़ता था। वस्तु करने के साथ मास्टर भी उन्हें सजा देते थे।

शैक्षिक वातावरण से व्यक्तिवाद का समापन— दलित समाज में स्वतंत्रता के वर्ष पूर्व भी उतना बदलाव नहीं आया था जितना आना चाहिए था। अभी भी उन्हें विद्यालय में प्रवेश करने का तो अधिकार था किंतु पढ़ने का अधिकार अभी भी उन्हें नहीं मिला था। फिर भी इतने विषम परिस्थितियों में अपार संघर्ष के साथ दलित समाज ने शिक्षा ग्रहण कि जिससे दलित साहित्य लेकर अपनी बात समाज मुख्यधारा में रख सकते थे।

काव्य तथा साहित्य का प्रचार— स्वतंत्रता की होड़ में ब्रिटिश शासन से निराश जनता के मन में आक्रोश उमड़ रहा था तथा अपनी आक्रोश तथा समस्याओं को अनेक लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से सबके सामने लाया तथा दलित समाज की दयनीय दशा के लिए एकत्रित होने वाले लेखकों ने दलितों की दशा को सम्पूर्ण जनता के सामने लाया तथा इनके विरोधी सभी पक्षों पर निशाना साधा तथा दलित

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

समाज द्वारा वहन कर रहे कष्टों के निवारण हेतु लेखक तथा संविधान के दलितों के लिए अलग से कानून की माँग की गई। स्वयं एक दलित हो दलितों की दशा को अच्छे से समझ सकता है अतः डॉ भीमराव अम्बेडकर ने दलित समाज के कष्टों का निवारण अपने आर्थिक प्रयासों से संविधान के निर्माण में दलितों को अलग से स्थान दिलाकर किया।

दलित आत्मकथाओं में जूठन का स्थान–

दलित आत्मकथाओं में जूठन एक विधा के रूप में सर्वत्र व्याप्त है। जूठन में दलित जीवन के विषय में जिस प्रकार क्रमिक व वर्णन किया गया है वह अनूठा है। वाल्मीकि जी ने अपने स्वयं के अनुभवों को साझा करने के साथ ही दलित समाज के अन्य कुरूपताओं पहलुओं को उजागर किया जो किसी अन्य लेखक के तुलना में अतुलनीय है। वाल्मीकि जी की आत्मकथा जूठन जातीय की दृष्टि से एक श्रेष्ठ आत्मकथा है जिसमें लेखक ने चित्रात्मकता का सहारा ना लेकर यथार्थ का चित्रण किया है।

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड — स

उत्तर सं० — 8

महादेवी वर्मा का नाम हिन्दी साहित्य जगत मे श्रेष्ठ लेखिकाओ मे सम्मिलित किया जाता है। इन्होंने अपने जीवन काल मे अनेक विधाओं की रचना करके हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे अति महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

महादेवी वर्मा जी का अन्य विधाओं के साथ साथ रेखाचित्र तथा संस्मरण विधा पर अधिक पकड़ थी। इनका रेखाचित्र अत्यन्त सजीव तथा मार्मिक है जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देता है।

भक्तिन महादेवी जी की सेविका थी जो अपने अनूठे व्यक्तित्व एवं सेवा की भावना के साथ महादेवी के हृदय मे अलग स्थान बना चुकी थी। महादेवी जी ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि भक्तिन का स्मरण उन्हे स्वतः ही हो जाता है तथा उसका व्यक्तित्व अब अविस्मरणीय है।

भक्तिन के बचपन का नाम लक्ष्मिन था वह एक गाँव की ग्रामीण औरत थी। उसका जीवन अत्यन्त संघर्षमय था जिसने उसके

Paper Code A 0 1 0 5 0 2 T

इसके व्यक्तित्व में अनेक चरित्र का विशेष। भक्तिन के बारे में जानने के लिए हम गहन अध्ययन करेंगे –

स्वाभिमानी, संघर्षशील नारी – भक्तिन एक भारतीय नारी के गुणों से परिपूर्ण नारी थी। वह व्यक्तित्व से स्वाभिमानी थी उसने अपने ससुराल में इतने कष्ट सहन करने के पश्चात भी कभी किसी की चाकरी नहीं की बल्कि अपनी तीन तीन लड़कियों का पालन पोषण अकेले ही किया।

संघर्षमय जीवन की वाहिका – भक्तिन के जीवन में जन्म से ही दुखों का पहाड़ टूट पड़ा था। बचपन में ही माता का देहावसान। स्वयं के पिता ने पांच वर्ष की आयु में ही विवाह कर दिया तथा विमाता ने 9 वर्ष की आयु में गौना करके उस जमींदार की पराया धन भी छुड़ा लिया।
शादी के बाद वह अपने पति के साथ घर गृहस्थी में लग गई किंतु ये ज्यादा अधिक समय तक न चल सका उसके पति भी स्वर्ग सिधार गये। बस भक्तिन पर दुखों का मानो पहाड़ ही टूट गया हो

पति परायण स्त्री — भक्तिन एक पतिव्रता भारतीय नारी है। वह एक अहीर कुल की वधू है जहाँ विधवा विवाह समाज के नजर में ओछित नहीं है किन्तु भक्तिन अपने पति की मृत्यु के बाद भी अपना साहस तथा धैर्य नहीं खोती तथा आजीवन दूसरा विवाह नहीं करती अपने ससुराल वालों के अधिक दबाव के कारण भक्तिन परेशान होकर ऐसे कहती है—

"हम कोई कुकर बिलार न हई हम मन पे स्त्राई तो दूसर घर देखब नाहि तो यही तुम्हर की छाती पर चढ़ी करब समझे जनौ कि नाही।"

सघर्षशील भारतीय नारी — भक्तिन संघर्ष के बोझ से दबी हुई अपने धैर्य को नहीं खोती। अहीर समाज में जिस स्त्री की बेटी होती है उसका जमी तिरस्कार करते है तब तो भक्तिन की तो तीन तीन बेटियाँ थी। भक्तिन की सास तथा जेठानियाँ बहुत ताना कसती तथा घर का सारा कार्य जैसे बर्तन मलना, बर्ती करना, चूल्हा चौका करना सब कुछ भक्तिन को ही करना पड़ता था। जेठानियों के लड़के कोई काम नहीं करते थे वहीं भक्तिन की लड़कियाँ गोबर उठाती कण्डा पाथती थी। जेठानियाँ अपने लड़कों को औटाए दूध की मलाई निकाल कर खिलाती थी। व भक्तिन की लडकियाँ रूखी

Paper Code A 0 1 0 9 0 2 7

सुरसा भजन करके अपना जीवन यापन करती थी।

अखरट एवं बद्धग्रंथि नारी — हरिया ने ही बच्चों को नष्ट करने कारण भक्तिन के स्वभाव में अक्खड़पन आ गया था वह कभी सही से बात नहीं करती थी।

स्नेहपूर्ण नारी — इतना कष्ट सहन करने के बाद भक्तिन के स्वभाव में भले ही अक्खड़पन आ गया हो किन्तु भीतर से उसके हृदय में स्नेह भरा पड़ा था। वह सभी के प्रति स्नेह का भाव रखती थी। बच्चों के चले जाने से उसे बहुत कष्ट होती था तथा वह अपने छात्रावास में रहने वाले बच्चों का बहुत सा काम स्वयं कर देती थी।

अपरिवर्तनशील नारी — भक्तिन ग्रामीण होने के बावजूद उसका व्यक्तित्व अत्यन्त अपरिवर्तनशील था। वह स्वयं के द्वारा लेखिका के दायरे में परिवर्तन लाना चाहती थी किन्तु स्वयं के भोजन में कोई परिवर्तन नहीं आने दिया। भक्तिन भले ही कहे

Paper Code 2 3 1 0 9 0 2 7

बाद हुआ है गाँव की है देहातिन औरत है जो किसी के रूप में नहीं इसलिए उसे अभी तो शहरी वातावरण का कुछ भी ग्रहण नहीं किया।

कुछ गलत कार्य भी करने वाली स्त्री – यूँ तो भक्तिन स्वभाव की अच्छी थी किंतु उसमे भी कुछ कुराइयाँ व्याप्त थी कभी - 2 वो चोरी भी करती थी किंतु उसके पास पहले ही सारे सवालों के जवाब होते थे उससे प्रश्न पूछने की कोई हिम्मत नहीं कुरता था

भक्तिन यूँ तो लेखिका की सेविका थी पहले लेखिका ने स्वयं स्वीकारा है भक्तिन उनकी सेविका नहीं वरन अभिभावक थी।

यूँ तो वो मेरी सेविका थी किंतु सेवक कहना उतना उचित नहीं है क्योंकि सेवक स्वामी के आस के बिना भी सेवा जारी रखता है तथा कौन सा स्वामी सेवक को सेवा करने से रोक भी नहीं सकता।

भक्तिन का व्यक्तित्व - लेखिका के मन में कहीं न कहीं वह गया था तभी लेखिका अपने अन्य रचनाओं में भी कहीं ना कहीं भक्तिन का वर्णन

अवरुध कर देती थी पति का व्यक्तित्व लेखिका के जीवन पर पूरी तरह छा गया था तथा लेखिका को उसकी आवश्यकता की आदत हो गई थी।